MAHARASHTRA

unlimited

जब आप यहाँ हैं तो

नासिक की

भव्यता का

रोमांचक आनंद लिजीए

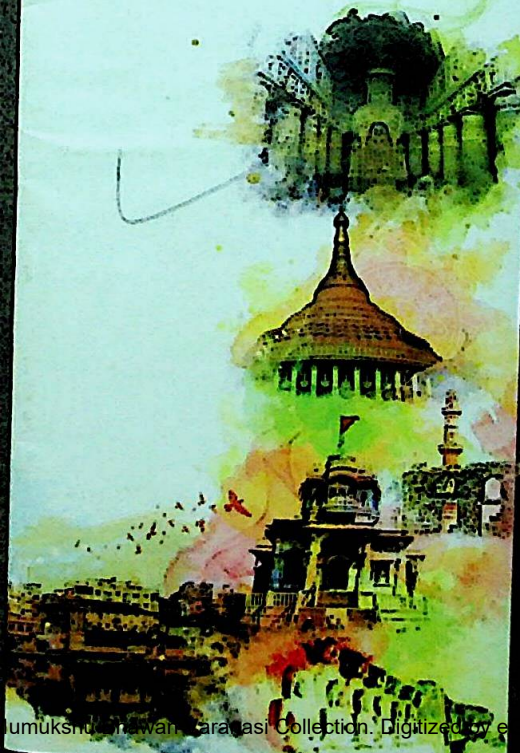

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

कुम्भ मेला

भारत के पवित्र त्यौहारों में से एक है और बड़े पैमाने पर आयोजित किया जाता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह माना जाता है कि जब ईश्वर और दैत्यों में अमृत को लेकर लड़ाई हो रही थी, तो भगवान विष्णु के अनुरोधपर इंद्रपुत्र जयन्त अमृत पात्र लेकर वहाँ से भाग निकले। उस समय अमृत की कुछ छलकी बूंदें, चार अलग-अलग स्थानों पर गिरीं, जहाँ हम कुंभ मेला मनाते हैं, ये स्थान हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयाग थे।

जब बृहस्पति और सूर्य सिंह राशि में आते हैं तो नासिक कुम्भ मेला मनाया जाता है। यह भारत के पवित्र त्यौहारों में से एक है और इसमें भारत और विश्व भर से करीब एक करोड़ लोग एकत्रित होते हैं। कुम्भ मेला बड़ी धूमधाम और सजधज के साथ मनाया जाता है, भीड़ जोश में भर जाती है और मेले का दृश्य विस्मित कर देने वाला होता है। भक्तजन एकत्रित होते हैं और बहुत सी रस्मों व पूजा का आयोजन करते हैं। धार्मिक चर्चा, भक्ति गायन, पवित्र स्त्री-पुरुषों और गरीबों को सामूहिक भोजन जैसे अनेक समारोहों का आयोजन होता है, इनमें स्नान को सर्वाधिक पवित्र समझा जाता है और यह कुम्भ मनाया जा रहे नगर में सम्पन्न होता है।

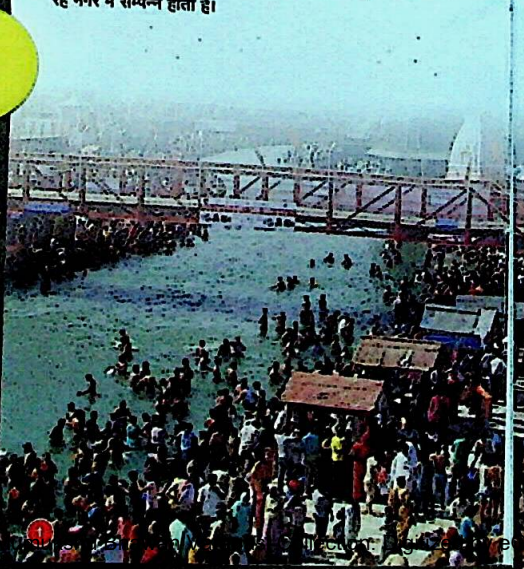

महत्वपूर्ण तिथियाँ

तिथि (2015)	आयोजन
14 जुलाई	रामकुंड में मुख्य समारोह का ध्वजारोहण
14 अगस्त	साधुग्राम में अखाड़ा ध्वजारोहण
26 अगस्त	श्रावण शुथा – प्रथम स्नान
29 अगस्त	पहिला शाही स्नान
13 सितंबर	दूसरा शाही स्नान
18 सितंबर	तीसरा शाही स्नान
25 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल द्वादशी–वामन द्वादशी स्नान

इसका इसलाम दे दीजिये

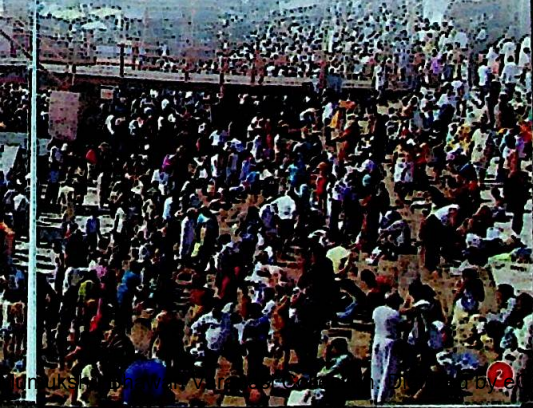

नासिक

पश्चिमी घाटोंके पूर्व में स्थित और गोदावरी नदी के तट पर बसा, नासिक प्राचीन और आधुनिकता का एक अद्भुत संगम है। इसके धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व के कारण इसकी अपनी अनूठी पहचान है। नासिक त्रिशती कुम्भ मेला के चार स्थलों में से एक है। 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, जो पवित्र गोदावरी के जल से स्फुरित हुआ है, निकटवर्ती त्र्यंबकेश्वर में अवस्थित है। नासिक न केवल अपने धार्मिक स्वरूप के कारण सम्मोहक है, बल्कि सुरा के लिए भी विशिष्ट है। यह भारत की सुरा राजधानी है।

गोदावरी घाट

गोदावरी घाट:

नासिक से होते हुए बहने वाली गोदावरी नदी का उत्तरी भाग वह स्थान है, जहाँ भगवान राम, सीता और लक्ष्मण अपने वनवास के दौरान रहे थे। यहाँ पाँच बरगद के पेड़ हैं। इसी वजह से इस पवित्र स्थान को पंचवटी कहा जाता है।

रामकुंड:

किंवदंती है कि भगवान राम और सीता अपने वनवास के दौरान, स्नान के लिए इस कुंड का उपयोग किया करते थे। इसे विश्व भर के हिन्दुओं के लिए सर्वाधिक पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है। इस पावन नदी में कुल 24 कुंड हैं, जिनमें से रामकुंड एक है।

श्री कपालेश्वर महादेव मंदिर:

यह केन्द्रीय बस स्थानक से सिर्फ एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर का सबसे प्रमुख पक्ष यह है कि इसमें भगवान शिव के सामने नंदी की कोई प्रतिमा विद्यमान नहीं है।

mukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

कालाराम मंदिर:

यह मंदिर केन्द्रीय बस स्थानक से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यह 200 वर्ष पूर्व रामशेज से लाए गए काले पत्थर से निर्मित है. यह मंदिर रामनवमी, दशहरा और चैत्र पाड्या पर घेरही शानदार यात्राओं और उत्सवों का साक्षी है।

सीता गुम्फा:

भगवान राम की पत्नी सीता को जिस समय रावण ने अपहरण किया था, जिससे राम व रावण के बीच महायुद्ध का सूत्रपात हुआ, वह यहीं ठहरी हुई थी यह हिन्दू धर्म के सर्वाधिक पवित्र मंदिरों में से एक है। यह केन्द्रीय बस स्थानक से सिर्फ दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

मुक्ति धाम:

मुक्ति धाम मंदिर नासिक मार्ग पर स्थित है और केन्द्रीय बस स्थानक से आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वास्तुशिल्प का एक उत्कृष्ट नमुना है। इस मंदिर के बारे में एक अनूठी बात यह है कि इसकी दीवारों पर गीता के सभी अठ्ठारह अध्याय लिखे हैं। यहीं पर बारह ज्योतिर्लिंगों की प्रतिकृतियां भी देखने को मिलती हैं। इस मंदिर में आना भारत के चारों धाम देखने जैसा है।

त्र्यंबकेश्वर मंदिर:

त्र्यंबकेश्वर भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है और इसलिए हिन्दू इसे अत्यंत पवित्र मानते हैं. कहते हैं कि जो भी त्र्यंबकेश्वर आता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह भी कहा जाता है कि यह भगवान गणेश का जन्मस्थल है। किंवदंती के अनुसार यह स्थान जहाँ सह्याद्रि पर्वत श्रंखला और गोदावरी विद्यमान है, विश्व का सबसे शुद्ध स्थान है।

त्र्यंबकेश्वर मंदिर

पांडवलेणी:

केन्द्रीय बस स्थानक से नौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इन गुंफाओं के उत्कीर्णन को 17 वीं शताब्दि में, पांडवों द्वारा किया गया माना जाता है। यहाँ कुल 19 गुंफाएं हैं। भगवान बुद्ध, बोधिसत्व जैन तीर्थंकर वृषभदेव, वीर कपिलभद्र और अंबिका देवी की प्रतिमाए हैं।

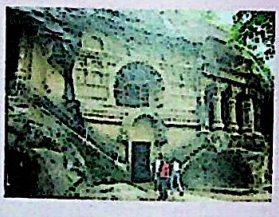

नांदुरी:

यह मंदिर महाराष्ट्र के साढ़े तीन शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। यह मंदिर भारतीय उपमहाद्वीप पर स्थित 51 शक्तिपीठों में से भी एक है और यह स्थान है, जहाँ पर मान्यतानुसार, सती (भगवान शिव की प्रथम पत्नी) की पिंडलियां, उनकी दाहिनी बांह गिरी थी।

सिक्कों का संग्रहालय:

1980 में स्थापित इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ रिसर्च इन न्युमिसमैटिक स्टडीज अंजेरी पहाड़ियों के सुरम्य परिवेश में स्थित है। यह एशिया में अपनी तरह का अनोखा है। भारतीय मुद्रा के एक विस्तृत अभिलेखागार के रूप में सिक्का संग्रहालय देखने योग्य स्थल है। यह पर्यटकों, अध्ययन और शोध के लिए एक वैश्विक गंतव्य है।

रामशेज:

नासिक से लगभग 14 किलोमीटर दूर, रामशेज डिंडोरी मार्ग पर स्थित है. अपने निर्वासन के दौरान भगवान राम ने यहाँ विश्राम किया था इसलिए इसका नाम रामशेज पड़ा (जहाँ राम ने विश्राम किया)। किले का एक लंबा इतिहास है और इसलिए यह पर्वतारोहण के शौकीनों में उत्सुकता जगाता है।

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eG

हरिहरगढ:

निरगुपाड़ा और त्र्यंबक में अवस्थित हरिहरगढ़ एक आधार ग्राम है। यह पर्वतारोहियों को उपलब्ध होने वाली इसकी विविधता के चलते सर्वाधिक रोचक ट्रैक्स में से एक माना जाता है।

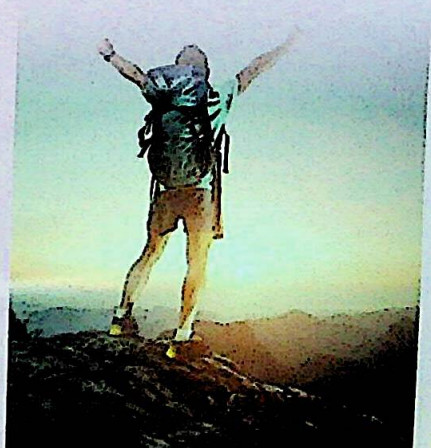

अंजनेरी:

त्र्यंबक मार्ग पर स्थित अंजनेरी नासिक से करीब 18-20 किलोमीटर दूर है। शौकीनों के बीच यह एक बहुत लोकप्रिय ट्रैक है और बहुत सारे लोग इस स्थान से पर्वतारोहण का आरंभ करते हैं। हनुमान की जन्मभूमि माना जाने वाला अंजनेरी काफी सुंदर और अनेक छोटे जलप्रपातों से युक्त है।

ब्रह्मगिरी:

त्र्यंबक गाव में स्थित ब्रह्मगिरी नासिक से करीब 25 किलोमीटर दूर है। यह मान्यता कि यह भगवान शिव का पर्वत रूप है और यह तथ्य कि गोदावरी नदी यहीं से उत्पन्न होती है, इस स्थान को महत्वपूर्ण बनाते हैं। श्रावण माह में हर सोमवार को आसपास से लाखों भक्तगण ब्रह्मगिरी आते हैं।

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

वाइनरी:

नासिक अंगूरों की सर्वाधिक उपज के लिए जाना जाता है। यह क्षेत्र महाराष्ट्र के अंगूर निर्यात में 75 प्रतिशत योगदान देता है। यहाँ तीस से ज्यादा वाइनरी हैं। इनमें सुला वाइनयार्ड, यॉर्क वाइनरी, ग्रेनेसां वाइंस, फ्लेमिंगो और विंसुरा ज्यादा प्रसिद्ध हैं। आगे बढ़ें और भारत की सुरा राजधानी में मन को विश्राम दें।

वाइन ट्रेल:

इगतपुरी से डिंडोरी के बीच फैले इस हिस्से में हम खुद को नासिक की सर्वश्रेष्ठ स्थानीय वाइनरीज में से साथ में पाते हैं।

झम्पा वाइनयार्ड्स:

खूबसूरत खेतों से गुजरते हुए एक छोटी सी ड्राइव के बाद एक आकर्षक लगने वाली इमारत क्षितिज पर नजर आती है। वाइन टेस्ट करने के लिए पृष्ठ भूमि में वाइनयार्ड का धूप से नहाया अहाता और ब्रंच के उपयुक्त स्थान हैं। इनमें तीन चार के बारे में कहा जाता है कि वे इस साल स्वाद को और आनंदमय बनाने की राह पर हैं।

इंडस वाइंस:

नासिक वादी में इगतपुरी क्लाइव्स है, जो ढलानों और बेंचों का एक रोचक खेल प्रस्तुत करती है। वे इस महाद्वीप की जो ग्रेविटी फ्लो ठिजाइन लागू करने वाली पहली वाइनयार्ड हैं और जो गुरुत्वाकर्षणीय बल को अंगूरों को सुरा बनने तक लेवल से लेवल और प्रोसेस से प्रोसेस तक ले जाने के लिए कोमलता से इस्तेमाल करती है।

शॅतीयू दफओरी:

नासिक सेंटर से एक घंटा पंद्रह मिनट की दूरी पर नासिक जिले के आकर्षक उपक्षेत्र डिंडोरी, सुला के बाद क्षेत्र की दूसरी सबसे बडी वाइनरी का स्थल है। शॅतीयू दफ ओरी एस्टेट ओझल होते नजारों और पहाड़ियों से लिपटी लंबी बेलों के साथ हमारी पार्टी को क्लासिकल कैलिफोर्नियाई अनुभवों का स्मरण कराता है। दफ ओरी भारत का सर्वश्रेष्ठ केबरनेट शिराज ब्लेंड बनाता है, जो ग्रोवर के ला रिजर्व को टक्कर देता है।

यॉर्क वाइनरी

सुला वाइनयार्ड और आगे सुला वाइनरी क्षेत्र में पहली थी, जिसका टेस्टिंग रूम था। यह स्थानीय और बाहरी लोगों में दिन प्रति दिन लोकप्रिय होती गई है और बहुत युवा लोग वाइनरी के टूर, टेस्ट और डिनर के लिए ड्राइव करके यहाँ आ रहे हैं। सुलाफेस्ट, देश का एकमात्र वाइन और म्यूजिक फेस्टिवल है, जो वाइनरी के निकट एक एम्फीथिएटर में आयोजित किया जाता है।

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

येवला:

येवला महाराष्ट्र का एक कस्बा और नगर परिषद है। पैठनी साड़ी की एक किस्म है, जिसका नाम पैठन कस्बे पर रखा गया है, जहाँ इन्हें हाथ से बुना जाता है। बहुत उम्दा किस्म के रेशम से बनी इन साड़ियों को महाराष्ट्र की सर्वाधिक समृद्ध साड़ियों में से एक माना जाता है। पैठनी को रूपांकन, बुनाई और रंगों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

सप्तश्रृंगी किला:

सप्तश्रृंगी किला एक हिंदू तीर्थस्थल है, जो नासिक से 60 किलोमीटर की दूरी पर है। हिंदू परंपराओं के अनुसार सप्तश्रृंगी निवासिनी देवी सात पहाड़ों की चोटियों पर वास करती हैं। यह नादुरी में स्थित है, जो नासिक

के निकट एक छोटा सा गांव है। इस मंदिर को महाराष्ट्र के साढ़े तीन शक्तिपीठों में से एक भी माना जाता है। यह मंदिर भारतीय उपमहाद्वीप पर स्थित 51 शक्तिपीठों में से भी एक है और वह स्थान है, जहाँ पर मान्यतानुसार, सती (भगवान शिव की प्रथम पत्नी) की पिंडलियां, उनकी दाहिनी बांह गिरी थी।

हदगढ़:

मुल्हेर के निकट और सह्याद्रि के लगभग कगार पर स्थित हदगढ़ किला, सुरगना तहसील और दक्षिण डांग्स पर नजर रखता है। यह एक सपाट चोटी वाली पहाड़ी पर अधिकार जमाए है, जो हदगढ़ गांव में पैर जमाए हुए मैदान से करीब 183 मीटर (600 फीट) और समुद्र तल से 1097.28 मीटर (3600 फीट) ऊंचाई पर [illegible]

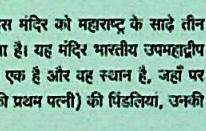

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

इगतपुरी:

इगतपुरी नासिक का एक और कस्बा है, जो पश्चिम घाट पर स्थित है। इगतपुरी को विपश्यना अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के लिए जाना जाता है। जहाँ विपश्यना नामक ध्यान की प्राचीन विधियां सिखाई जाती हैं।

धम्मगिरी:

धम्मागिरी अर्थात् धर्म की पहाड़ी, विश्व के सबसे बड़े विपश्यना केंद्रों में से एक है। यह महाराष्ट्र में इगतपुरी के विपश्यना अनुसंधान केंद्र के पास ही है। मुंबई से लगभग तीन घंटे ड्राइव करके यहाँ आया जा सकता है। केन्द्र ने अपना पहला कोर्स 1976 में प्रस्तुत किया था। आज हर साल हजारों विद्यार्थी यहाँ अध्ययन के लिए आते हैं। सेंटर के पागोडा में व्यक्तिगत ध्यान के लिए 400 से अधिक प्रकोष्ठ हैं।

भवाली:

भवाली डैम इगतपुरी के निकट भाम नदी पर एक अर्थफिल डैम है। भवाली डैम सह्याद्रि पहाड़ियों की गोद में अवस्थित है। घने वृक्षों और नयनाभिराम नजारों से घिरी इस डैम की जगह पर्यटकों और स्थानीय लोगों के लिए एक आनंद का स्रोत है।

अहमदनगर:

अहमदनगर भारत के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में से एक है. यह पुणे के उत्तर पूर्व में लगभग 120 किमी और औरंगाबाद से 114 किमी की दूरी पर है। अहमदनगर देश के सबसे हरित शहरी क्षेत्रों में भी शामिल है। यह शहर निजामशाही सल्तनत के अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारकों का साक्षी है।

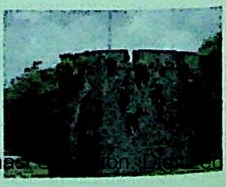

जिले में काफी संख्या में मंदिर भी हैं, इनमें से कई प्राचीन हैं, जहाँ

mukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

काफी तीर्थयात्री आते हैं। इनमें से शिर्डी भारत में बहुत प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध साईंबाबा मंदिर शिर्डी में ही स्थित है। अहमदनगर के अन्य प्रसिद्ध पर्यटनस्थलों में अहमदनगर किला, आनंदधाम, मुला डेम, चांदबीबी महल आदि शामिल हैं।

ब्लैक बक संचुरी:

अहमदनगर जिले के करजत तालुका के रेखुरी में कृष्ण मृगों के लिए एक अभयारण्य है। इस अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल 340 हेक्टेयर है, जिसमें 400 से अधिक कृष्ण मृग और करीब 300 चिंकारा हिरण देखे जा सकते हैं।

भंडारदरा:

भंडारदरा स्थान प्रवरा नदी के निकट है और यह प्राकृतिक सौंदर्य, झरनों, पर्वतों, विश्रांति, हरियाली, ताजगी का एहसास कराती हवा और प्राचीन वातावरण का संगम है। विल्सन डैम और रांधा प्रपात प्रमुख पर्यटक आकर्षण हैं।

विल्सन डैम से आर्थर डैम तक, भंडारदरा अनेक आकर्षणों से भरपूर है। आप रतनगढ़ और हरिश्चंद्रगढ़ किले को देखने के लिए चढ़ाई कर सकते हैं। या फिर आप अजोबा और घनचक्कर चोटियों की ओर ले जाने वाली राह का अनुसरण कर सकते हैं. अगर आपको चुनौतियां पसंद है तो आपसे मुकाबला करने के लिए महाराष्ट्र की सबसे ऊंची चोटी माउंट कलसुबाई सामने खड़ी है। इस चुनौती भरे ट्रैक का आरंभिक स्थान बाड़ी गांव में है, जो भंडारदरा से 12 किमी की दूरी पर स्थित है। चोटी पर एक छोटा सा मंदिर और स्टैंडिंग है। शीर्ष पर खड़े होकर आप सह्याद्रि और

lumuks awan Varanasi Collecti by e

शिरडी

शिरडी, साईबाबा की भूमि के रुप में जग विख्यात है। मन को शांति प्रदान करने वाला यह शहर भारत के सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु एवं संत श्री साईबाबा के घर के रुप में सबसे अधिक विख्यात है। साईबाबा 16 वर्ष की आयु में शिरडी आये थे और मरणोपरांत तक यहीं रहें। शिरडी, भारत के सभी प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है, जहाँ बारहों महीने श्रद्धालुओं का ताता लगा रहता है। भारत के अलावा पूरी दुनिया भर के श्रद्धालु और पर्यटक हर समय साईबाबा के दर्शन करने आते ही रहते हैं।

शिरडी साई मंदिर:

पूरे शहर की रचना शिरडी साईबाबा मंदिर के प्रमुख आकर्षण के आधार पर हुई है, जिसकी स्थापना वर्ष 1922 में हुई थी। श्री साई मंदिर का निर्माण उस स्थान पर हुआ है, जहाँ संत साईबाबा की समाधि है। वहाँ पहुँचने के बाद ऐसा महसूस होता है कि जैसे बाबा आज भी जीवित हैं और भक्तों के इसी अनुभव और विश्वास के बल पर संस्थान चल रहा है, जो सारी सुविधाओं से सुसज्जित है। बाबा की नगरी शिरडी में प्रवेश करते ही यह महसूस होने लगता है कि जैसे किसी पावन स्थल पर आ गये हैं। शिरडी अपनी पूजा और तीर्थस्थल, रहस्यपूर्ण वातावरण और आकर्षण के लिए ही जग विख्यात है।

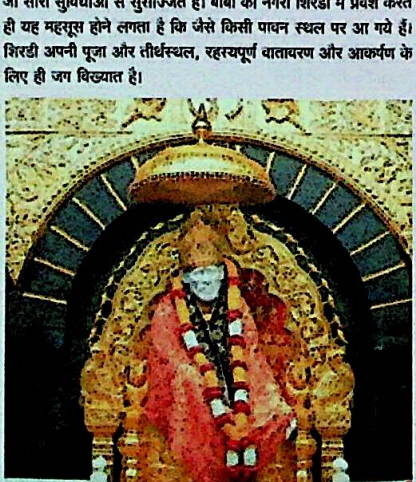

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

मंदिर खुलने और बंद होने का समय:

हर सुबह 4:30 बजे साईबाबा की काकड़ आरती के साथ मंदिर का द्वार खुलता है और रात 10:30 बजे बाबा की शेजारती आरती के साथ बंद होता है। गुरुपूर्णिमा, दशहरा और रामनवमी जैसे पावन अवसरों पर मंदिर दिन-रात खुला रहता है। बृहस्पतिवार के दिन और उपरोक्त त्योहारों के अवसरों पर मंदिर से साईबाबा के फ़ोटो साथ एक पालखी निकाली जाती है।

वेट एंड जॉय वाटर पार्क:

शिरडी के आध्यात्मिक दर्शन के बाद आराम और आनंद के लिए वाटर पार्क सबसे बेहतरीन विकल्प है, जहाँ आप अपने पूरे परिवार के साथ खुद को तरोताजा कर सकते हैं। वाटर पार्क में हर तरह के मनोरंजन के साथ आप खुद में एक नयापन पायेंगे, साथ ही आपको उसका पल का अहसास होगा, जिसका आपको अभी तक इंतजार था।

कैसे पहुँचें शिरडी:

नासिक से 95 किमी. की दूरी पर स्थित है यह शांतिपूर्ण शहर। शिरडी जल्दी और आसानी से पहुँचने के लिए नासिक सबसे बेहतरीन स्रोत है। नासिक से टैक्सी पकड़कर मात्र दो घंटे में शिरडी पहुँचा जा सकता है।

शनिदेव का धाम-शनि शिंगणापुर:

शनि शिंगणापुर का एक अलग ही महत्व है। शिरडी से शनि शिंगणापुर की दूरी मात्र 73 किमी है। जहाँ कार के माध्यम से मात्र डेढ़ घंटे में आसानी से पहुँचा जा सकता है।

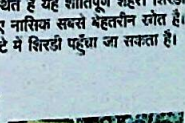

विश्व प्रसिद्ध इस शनि मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ स्थित स्वयंभू की पाषाण प्रतिमा बगैर किसी छत्र या गुंबद के खुले आसमान के नीचे एक संगमरमर के चबूतरे पर विराजित है। देश-विदेश से श्रद्धालु यहाँ आकर शनिदेव की इस दुर्लभ प्रतिमा के दर्शन का लाभ लेते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शिंगणापुर के अधिकांश घरों में खिड़की, दरवाजे और तिजोरी नहीं हैं। दरवाजों की जगह यदि लगे हैं तो केवल पर्दे। ऐसा इसलिए, क्योंकि यहाँ चोरी नहीं होती। कहा जाता है कि जो भी चोरी करता है, उसे शनि महाराज उसकी सजा स्वयं दे देते हैं।

श्री सिद्धटेक गणेश मंदिर:

भीमा नदी के तट पर स्थित सिद्धटेक, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में पड़ता है, जो भारत के पश्चिमी क्षेत्र में आता है। सिद्धटेक तीर्थ स्थल श्री सिद्धिविनायक गणपति भगवान को समर्पित है। मंदिर में श्री सिद्धविनायक गणेश की स्वयंभु प्रतिमा विराजित है, जिन्हें विघ्नहर्ता के नाम से जाना जाता है। यहाँ श्री सिद्धविनायक गणेश सिद्धी देने वाले बलशाली देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

चाँढी:

चाँढी गाँव, पुण्यश्लोक राजमाता अहिल्यादेवी होलकर की जन्म स्थली है। महाराष्ट्र सरकार ने चाँढी को राष्ट्रीय स्मारक के रुप में विकसित करने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है।

निघोज:

अहमदनगर से लगभग 90 किमी. की दूरी पर स्थित निघोज एक ऐसा सुप्रसिद्ध गाँव है, जहाँ कुकडी नदी है। उस नदी की मुख्य विशेषता यह कि उसमें स्वाभाविक रुप से जलज कुंड का निर्माण होता है। यहाँ हर वर्ष दुनिया भर के विशेषज्ञ इस अद्भुत रहस्य की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए आते हैं। इसके अलावा इस गाँव में कई मंदिर भी हैं। उनमें से पुरानी नदी के तट पर स्थित मलंगना मंदिर बहुत ही शुभ माना जाता है।

धूले:

धूले पर्यटकों के लिए आकर्षण का मुख्य स्थान है, क्योंकि यह यहाँ आने वालों को उम्मीद से बढ़कर देता है। इस जिले में कई सुप्रसिद्ध मंदिर हैं, जिनमें से कई मंदिर तो बहुत ही प्राचीन हैं। यहाँ आपको कई मंदिर क्लासिकल हेमाडपंथी-स्टाइल के भी मिलेंगे। कई मंदिरों के अलावा, धूले जिले में प्रचुर मात्रा में किले (फोर्ट) भी हैं, जहाँ पहुँचकर आप एक जीवत इतिहास का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

रजवाड़े म्यूजियम:

रजवाड़े म्यूजियम महाराष्ट्र के महान् इतिहासकार श्री विश्वनाथ काशीनाथ रजवाड़े के स्मरण में निर्मित है। 31 दिसंबर, 1926 में अपना देह त्याग करने से पहले, उन्होंने संस्कृत और मराठी हस्तलिपि के बेहतरीन संग्रह हमारे लिए छोड़ गये हैं।

एकविरा माता मंदिर:

एकविरा माता मंदिर, धूले शहर का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। पांझरा नदी के तट पर स्थित इस प्राचीन मंदिर को महान् देवी एकविरा माता का घर कहा जाता है।

समर्थ वाग्देवता मंदिर:

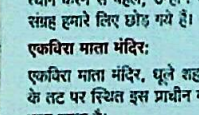

श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर, हस्तलिपियों, पत्रों और इतिहास के वृत्तांत का अनमोल खजाना है। इसके अलावा यह मंदिर, मदर इंस्टीट्यूट-सत्कार्योत्तेजक सभा की एक गौरवशाली शाखा भी है।

जलगाँव:

जलगाँव, पश्चिमी भारत का एक समृद्ध शहर है। महाराष्ट्र राज्य की उत्तर दिशा में स्थित जलगाँव सिर्फ एक शहर ही नहीं, बल्कि एक प्रमुख जिला भी है। महाराष्ट्र राज्य के केला उत्पादन में आधी हिस्सेदारी जलगाँव [illegible]

mukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

जाता है। केला उत्पादन के अलावा जलगाँव में कुछ प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी हैं, जिसमें श्री पदमालया, पटनदेवी, उन्पडो, संत मुक्ताबाई मंदिर, चाँगदेवो मंदिर, मनुदेवी मंदिर और ओम्कारेश्वर जैसे पावन मंदिर शामिल हैं।

गांधी तीर्थ:

दुनिया का पहला ऑडियो गाइडेड गांधी संग्रहालय (म्यूजियम) खोज गांधीजी की गांधी तीर्थ, जैन हिल्स, जलगाँव में स्थित है। यह एक ऐसा स्थल है, जहाँ दुनिया-भर के शोधकर्ता और आगंतुक हमेशा आते रहते हैं। इस संग्रहालय में अध्ययन के लिए गांधी जी के बारे में विशाल ग्रन्थालय और गांधी से संबंधित अन्य सभी सामग्री उपलब्ध है। गांधी जी का यह एकमात्र

ऐसा संग्रहालय है, जिसमें ऑडियो गाइड की सुविधा है। इस संग्रहालय में गांधी के बारे में लिखी हुई लगभग 8000 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अलावा 2 लाख से अधिक डिजिटाइज्ड डॉक्यूमेंट्स पेज, गांधी जी द्वारा दिये गये 152 ऑडियो भाषण, 85 डॉक्यूमेंट्स एवं गांधी जी की 116 देशों के मूल टिकट संग्रह सामग्री इत्यादि यहाँ पर देखी जा सकती है।

स्विंगिंग टावर्स ऑफ फरकांडे:

इंजीनियरों ने इस टावर का निर्माण इतने अनूठे तरीके से किया है, जो काबिले-तारीफ है। यह एकमात्र ऐसा टावर है, जिसके वाइब्रेट होते ही, दूसरे वाइब्रेट खुद-ब-खुद होने लगते हैं। इसके अलावा सबसे आश्चर्य की बात यह है कि दो टावरों के बीच में कार्य के लिए कोई फिजिकल सपोर्ट नहीं है।

नंदुरबार:

नंदुरबार भारतीय राज्य महाराष्ट्र का एक प्रशासनिक जिला है, जो महाराष्ट्र राज्य के उत्तरी पश्चिमी कोने में स्थित है। आदिवासी पावड़ा के लिए प्रसिद्ध नंदुरबार महाराष्ट्र का एक नवगठित जिला है। इस जिले को धूले जिले से पृथक कर 1 जुलाई, 1998 में गठित किया गया था। जिले का मुख्यालय नंदुरबार शहर में स्थित है।

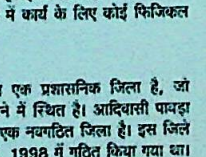

प्रकाशा:

प्रकाशा एक सुप्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, जिसे दक्षिण काशी के नाम से भी जाना जाता है। यह धार्मिक स्थल शहादा तहसील में स्थित है, जो

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eG

नदुंरबार जिले का एक तालुका है। यहाँ स्थित प्रकाशा मंदिर बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध है। इसके अलावा शहादा से 24 किमी. की दूरी पर जयनगर में भगवान श्री गणेश जी (हेरम्ब) का एक भव्य और प्रसिद्ध मंदिर है। मंगली चतुर्थी के अवसर पर इस मंदिर में लाखों श्रद्धालुओं का आगमन होता है। सारंगखेड़ा में स्थित श्री दत्त मंदिर भी भक्तों के लिए आकर्षण और श्रद्धा का केन्द्र है। दत्त जयंती के अवसर पर यहाँ हर वर्ष एक भव्य और विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें घोड़ों की बिक्री आकर्षण का मुख्य केन्द्र है।

तोरणमल:

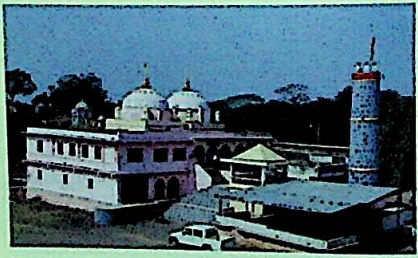

तोरणमल, महाराष्ट्र राज्य का दूसरा सबसे कूलेस्ट हिल स्टेशन है, जो शहादा से मात्र 40 किमी. की दूरी पर स्थित है। सबसे कूलेस्ट

हिल स्टेशन होने के अलावा तोरणमल, महाराष्ट्र राज्य का दूसरा सबसे लाजवाब स्थान है। यहाँ की प्राकृति झील यहाँ का मुख्य आकर्षण है, जिसे यशवंत झील के नाम से जाना जाता है। यह प्राकृतिक झील कमल के फूल से पूरी तरह सुसज्जित है। प्रर्यटन स्थलों के भ्रमण और पिकनिक की दृष्टि से यह सबसे लाजवाब स्थान है। इसके अलावा शहादा तहसील में स्थित उनपदेव भी सुखद पिकनिक स्थल है। यहाँ प्राकृतिक रुप से गर्म पानी का स्रोत मिलता है, जो बारहों महीने गाय के मुख के समान निर्मित ढांचे से आता रहता है।

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

औरंगाबाद

महाराष्ट्र का शहर औरंगाबाद का यह नाम मुगल सल्तनत के बादशाह औरंगजेब के नाम से रखा गया है। यह शहर कई सारे ऐतिहासिक स्मारकों से घिरा है। मशहूर यूनेस्को विश्व धरोहर जगह, अजंता एलोरा की गुंफायें भी उन्ही में से एक है। हाल ही में औरंगाबाद शहर को महाराष्ट्र की पर्यटन राजधानी घोषित किया गया है।

खाम नदी के दाहिने किनारे पर दख्खन पठार पर बसा ये शहर मुंबई से ईशान्य दिशा की ओर 388 किमी की दूरी पर है और देश के सारे हिस्सों से अच्छी तरह जुड़ा है। आज औरंगाबाद शहर एक औद्योगिक केंद्र होने के साथ-साथ एक आधुनिक शहर भी बन चुका है जो दुनियाभर के भारत की प्राचीन कला में रूचि रखनेवाले पर्यटकों को आकर्षित करता है।

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. eGangotri

जुम्मा मस्जिद:

औरंगाबाद में मलिक अंबर ने बनायीं हुई 7 मस्जिदों में से जुम्मा मस्जिद काफी मशहूर है। इस मस्जिद में पचास बहुभुज खम्भे हैं जो पांच कतारों में मेहराब की व्यवस्था से इस तरह जुड़े है कि पूरी मस्जिद 27 एक समान कमरों में विभाजित हुई है। हर कमरा सुरुचिपूर्ण रचना के गुंबद से आवृत है।

शाहगंज मस्जिद:

मस्जिद जमीन से ऊपर उठे मंच पर बनी है। मस्जिद की तीन तरफ दुकाने हैं जब की चौथी बाजू खुली है जो की प्रवेशद्वार की है। इस प्रवेशद्वार के सामने पांच गोलाकार मेहराब से बना रास्ता है। इस मस्जिद का निर्माण इंडो-सारासेनिक वास्तुकला में किया गया है और पत्थरों के खंभों का इसे आधार दिया गया है।

कचनेर:

औरंगाबाद से 37 किमी की दूरी पर स्थित कचनेर, जैन धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है जहाँ हजारों की मात्रा में तीर्थयात्री अपार श्रद्धा से भेंट देने आते हैं। ये सुंदर मंदिर जैन तीर्थंकर, चिंतामणि पार्श्वनाथ को समर्पित है।

घृष्णेश्वर मंदिर:

यह पवित्र शिवजी को समर्पित मंदिर भारत के मशहूर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर का निर्माण सुंदर कारीगरी के साथ रानी अहिल्याबाई होलकर की निगरानी में हुआ।

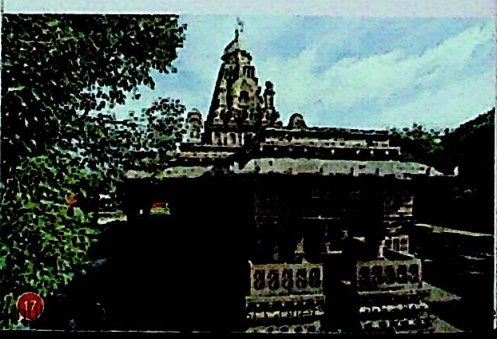

औरंगाबाद से 6 किमी की दूरी पर बीबी का मकबरा स्थापित है। औरंगजेब के बेटे, शहजादा आज़म शाह ने अपनी माँ बेगम रबिया दुरानी की याद में इसे बनाया। यह मस्जिद, प्रसिद्ध ताजमहल की हूबहू नकल है।

यह सफ़ेद संगमरमर की मस्जिद चारों कोनों में चार मीनार के साथ ऊँचे मंच पर स्थित है। उसका गुंबद और निचला हिस्सा बेहतरीन नक्काशियों से और महीन चुनाकाम से सजा है। यह स्मारक चारों तरफ से बंदिस्त क्षेत्र में है। जिनमें से तीन बाजू सुन्दर चित्रकारिता से सजे खुले मंडप हैं। तालाबों के साथ बाग, फव्वारें, पानी की नहर, पीतल के सुंदर दरवाजे और फूलों का पलस्तर काम इन सब चीजों से यह मस्जिद दख्खन की बेहतरीन रचनाओं में से एक बन चुकी है।

अजंता गुंफायें:

ई.स.के पूर्व दूसरे शतक के कालखण्ड में अजंता गुंफायें बनाने का कार्य प्रारम्भ हुआ। अजंता गुंफाये पत्थर तराशकर बनायीं 29 बौद्ध गुंफाओं की शृंखला है जो धेरवाड़ा और महायना परम्पराओं का मिश्रण है। इनमें से कुछ गुंफायें महान बौद्ध कला की बेजोड़ मिसाल है। ये गुंफाये दो चरणों में यानी ई.स. के पूर्व दूसरे शतक के कालखण्ड में और ई.स. के पूर्व छठे शतक के कालखण्ड में बनी है।

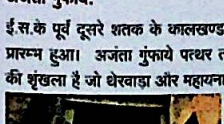

एलोरा गुंफायें:

ई.स. के पूर्व के छठें और दसवें शतक में बनी यह एलोरा गुंफायें हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म के गुंफा मंदिर संकुल हैं। अजंता जितना इनका इतिहास प्रभावशाली तो नहीं पर सुन्दर कलाकृति के कारण महाराष्ट्र के सबसे ज्यादा देखे जानेवाले प्राचीन स्मारकों मे से यह एक हैं। कैलास मंदिर जो एक ही पत्थर मे से तराशकर बनाया गया है, एलोरा की बेहतरीन कलाकृति मे से एक है। यहाँ देखने लायक जो कलाकृतियां हैं उनमे सप्तमातृका के भावचित्र (नारी और माँ की सात मनोदशाएँ) और महाभारत और रामायण की कथा दर्शाते सचित्र लेख हैं।

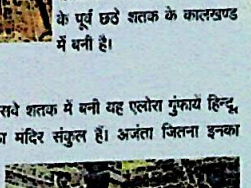

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By e

पीतलखोरा गुंफायें:

ये गुंफायें एलोरा गुंफाओं से 40 किमी की दूरी पर है जो की सबसे पुरानी लगभग ई.स. पूर्व दूसरे शतक की मानी जाती है। मुख्य रूप से यह गुंफाये विहार रूप या बौद्ध गुंफा सम्मिलित है और संकरित घाटी की तरफ से बनायीं हैं।

दौलताबाद किला:

औरंगाबाद से 13 किमी की दूरी पर स्थित 12 वें शतक में बना ये

किला आलिशान किला कहलाता है। पहले यादवकुल के राज्यकर्ताओं के लिए ये किला मुख्यालय के रूप में इस्तेमाल होता था और तब देवगिरी नाम से जाना जाता था। दिल्ली के सुलतान मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में देवगिरी से उसका नाम दौलताबाद हुआ।

गौताला अभयारण्य:

गौताला औट्रमघाट अभयारण्य महाराष्ट्र का संरक्षित क्षेत्र है। ये पश्चिमी घाटी के सातमाला और अजंता की पहाड़ी शृंखला में बसा है। इस अभयारण्य मे जंगली जीवन 1986 में, पहले से स्थापित जंगली क्षेत्र में निर्माण किया गया। इस अभयारण्य का क्षेत्र कुल मिलाकर 26,061.19

हेक्टेयर्स (64,399 एकड़) -जिसमे औरंगाबाद में संरक्षित जंगल क्षेत्र 19,706 हेक्टेयर्स और जलगांव में 6355.19 हेक्टेयर्स है – शामिल करता है।

सलीम अली पक्षी अभयारण्य:

औरंगाबाद में हिमायत बाग के सामने दिल्ली गेट के पास स्थित सलीम अली

पक्षी अभयारण्य, एक नदी के मुख पर बसा है। मोघल साम्राज्य में इसे खीझिरी तालाब कहा जाता था।

बाद में इसे प्रख्यात भारतीय पक्षी विज्ञानी सलीम अली का नाम

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

दिया गया। अभयारण्य और द्वीप रायबंदर और चोराव के बीच चलनेवाली फेरी सेवा की वजह से जुड़ा है। अभयारण्य में पैदल चलने के लिए पक्का रास्ता है।

अजंता जंगल क्षेत्र:

अजंता गुंफाओं से 4 किमी की दूरी पर स्थित ये जंगल प्राचीन, अनोखा और हमेशा हराभरा रहनेवाला जंगल है।

पैठण:

औरंगबाद से दक्षिण की तरफ 50 किमी की दूरी पर गोदावरी नदी के किनारे पर पैठण शहर बसा है। ये शहर महान संत कुक्कुटेश्वर और संत एकनाथ की जन्मभूमि है। यहाँ के घाट, शहर के सबसे प्राचीन रचनाओं में आते हैं। आजकल पैठण, हाथ से बुनी और कमाल के रंगों से सजी सिल्क साड़ी के लिए प्रख्यात है। औरंगाबाद पैठण शहर से नियमित बस सेवा से जुड़ा है।

जायकवाडी डैम:

जायकवाडी डैम, महाराष्ट्र राज्य की सबसे बड़ी सिंचन परियोजनाओं में से एक है। यह एक बहुउद्देशीय परियोजना है। इसका पानी मुख्य रूप से राज्य के सूखे से पीड़ित क्षेत्र मराठ्याड़ा को सिंचित करने के लिए होता है। इसके अलावा औरंगाबाद और जालना जिले के नजदीकी शहर और गाव में पीने का पानी देने और औद्योगिक इस्तेमाल के लिए भी इस डैम का पानी उपयोग में लाया जाता है। इस डैम के आसपास के क्षेत्र में बाघ और पक्षी अभयारण्य फैला हुआ है।

umu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by

नासिक यात्रा सूचना

नासिक तक कैसे पहुंचे.

नासिक रेलवे स्थानक, मध्य रेलवे मुख्य स्थानकों मे से एक है। नासिक से दूसरे शहरों को जोड़नेवाली रेलवे संख्या भी भारी मात्रा में है। नासिक, मुंबई से 165 किमी की दूरी पर है और राष्ट्रीय राजमार्ग-3 के जरिये (थाना-कसारा-इगतपुरी) नासिक तक पहुंचा जा सकता है। पूना से नासिक 210 किमी की दूरी पर है। पूना, औरंगाबाद, शिरडी, मुंबई से भारी संख्या में व्यक्तिगत विडिओ कोच और राज्य की बस सुविधाएँ भी है। मुंबई से नासिक के लिए हर रोज टैक्सी सुविधा भी है। यात्री अपनी सुविधानुसार स्थानीय यातायात के लिए टैक्सी, ऑटो रिक्शा, वैन आदि का इस्तेमाल कर सकते है।

मौसम:

गर्मी के मौसम में तपमान 30 से 35 डिग्री सेल्सियस होता है। सर्दी के मौसम में यही तपमान 18 से 25 डिग्री सेल्सियस होता है। नासिक आने के लिए सबसे अच्छा मौसम अक्टूबर से फ़रवरी तक का होता है।

आवास

होटल्स:

एक तीर्थस्थल होने की वजह से नासिक हमेशा पर्यटकों से भरा रहता है। इसलिए यहाँ उच्च श्रेणी से लेकर छोटी स्थानीय धर्मशाला (गेस्ट हाउस) भी आसानी से आवास लिए उपलब्ध होती हैं।

रेस्तरां:

नासिक शहर वहां पर बनते स्वादिष्ट चिवड़ा के लिए प्रख्यात है। धार्मिक शहर होने के बावजूद भी नासिक खाद्यप्रेमियों के लिए भी पसंदीदा जगह बनता जा रहा है जहाँ पर भारतीय, यूरोपियन और चायनीज खाना भी आसानी से मिल जाता है।

नासिक शहर और आसपास के इलाके में एमटीडीसी के नाश्ता और निवास योजना के अंतर्गत बंगले पंजीकृत है।

संपर्क:

एमटीडीसी कार्यालय

पर्यटन भवन, सरकारी अतिथि गृह,

गोल्फ क्लब के पास, नासिक - 422 022.

दूरभाष सं.: 0253-2570059/2579352

ईमेल: ronashik@maharashtratourism.gov.in

पोर्टल: www.maharashtratourism.gov.in

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

आपातकालीन दूरभाष

पुलिस	
आपातकालीन	100, 2575100
पुलिस कमीशनर	2305200
नासिक नियंत्रण कक्ष	2305233
पंचवटी	2512733
अम्बड़	2392233
सरकारवाड़ा	2319621
भद्रकाली	2590333
देवलाली कैम्प	2491233
सातपुर	2350599
अग्निशामक दल	
आपातकालीन	101
शिंगाड़ा तालाब	2509766
नासिक रोड	2461379
पंचवटी	2512919
सातपुर	2350500
सिडको	2393961
डॉक्टर	1911
एम्ब्युलेंस	
आपातकालीन	102
सिविल अस्पताल	2576106
रेलवे पूछताछ	
नासिक	2572715
नासिक रोड	2461274
बस पूछताछ	
सी.बी.एस	2572854
न्यू सी.बी.एस.	2309308
राजमार्ग बस स्थानक	2582532
नासिक रोड	2465304
अन्य टोल फ्री नंबर	
महिला संकट निवारण	1091
जिलाधिकारी/ मैजिस्ट्रेट का नियंत्रण कक्ष	1077
प्राकृतिक आपदा नियंत्रण कक्ष	1096
बच्चों पर आपदा / मुसीबत निवारण सेवा	1098
रक्त बैंक जानकारी सेवा	1910

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by e

नासिक नक्शा

महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम
नासिक कार्यालय: पर्यटन भवन, सरकारी अतिथि गृह,
गोल्फ क्लब के पास, नासिक - 422 022.
दूरभाष: 0253-2570059 / 2579352
ईमेल: ronashik@maharashtratourism.gov.in
संकेतस्थळ: www.maharashtratourism.gov.in

umukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by